अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली | मंगलवार, 28 मई 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

जो कुछ हमारा है, वो हम तक तभी पहुंचता है जब हम उसे ग्रहण करने की क्षमता विकसित करते हैं।
-रवींद्रनाथ टैगोर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इमरान खान ने चुनाव में जीत की बधाई दी है, लेकिन इस औपचारिक पेशकदमी से आगे बढ़कर पाकिस्तान जब तक आतंकवाद और हिंसा के खिलाफ स्पष्ट रुख पेश नहीं करता, द्विपक्षीय संबंधों में बड़ा बदलाव नहीं आ सकता।

पाकिस्तान रुख बदले

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी दूसरी पारी शुरू करने से पहले पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान से दो टूक कहा है कि क्षेत्र की शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए हिंसा और आतंक से मुक्त माहौल बनाने की जरूरत है, जिससे उनकी सरकार की प्राथमिकता को समझा जा सकता है। आम चुनाव में मिली सफलता के तुरंत बाद इमरान खान ने पहले मोदी को ट्वीट कर बधाई दी थी और उसके बाद उन्होंने रविवार को उन्हें फोन भी किया। निश्चित रूप से इमरान की यह पेशकदमी एक औपचारिकता ही है, लेकिन 14 फरवरी को पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर हुए जैश-ए- मोहम्मद के आत्मघाती हमले के बाद, जिसमें देश के चालीस जवान शहीद हो गए थे, दोनों देशों के शीर्ष स्तर पर यह पहला संवाद है। इस हमले के बाद भारतीय वायुसेना ने सरहद पार जाकर बालाकोट में आतंकी शिविर को ध्वस्त किया था और उसके बाद से दोनों देशों के रिश्ते न्यूनतम स्तर पर आ गए थे। उसी दौर में भारत के कूटनीतिक दबाव के कारण चीन ने जैश सरगना मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी घोषित किए जाने को लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से अपनी आपत्ति हटाई। दरअसल पाकिस्तान से संबंधों को लेकर भारत का नजरिया एकदम स्पष्ट है कि जब तक वह अपनी जमीन से आतंकवाद का संचालन बंद नहीं करता, उसके साथ कोई बात नहीं हो सकती। इस बीच, 21 और 22 मई को किर्गिस्तान के बिश्केक में हुए शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक में हिस्सा लेने जा रहीं विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के विमान को अपनी वायुसीमा से गुजरने की पाकिस्तान ने इजाजत दी, जो भले ही सौजन्यता हो, लेकिन इससे दोनों देशों के रिश्तों में जमी बर्फ पिघल सकती है। ध्यान रहे, बालाकोट की कार्रवाई के बाद से पाकिस्तान ने भारतीय विमानों के लिए अपना आकाश बंद कर रखा है, जिससे भारतीय विमानन कंपनियों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। अगले महीने एससीओ की बैठक में बिश्केक में प्रधानमंत्री मोदी की इमरान खान से मुलाकात हो सकती है और यह मौका द्विपक्षीय संबंधों के लिहाज से काफी अहम होगा। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज और अंतरराष्ट्रीय दबाव और विपक्ष की गोलबंदी से घिरे इमरान खान को ही यह तय करना है कि आखिर वह भारत के साथ रिश्ते को कहां ले जाना चाहते हैं।

मोदी की आंधी और कांग्रेस की वोटबंदी

नरेंद्र मोदी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 'राष्ट्रीय' शब्द को खत्म कर दिया। तमिलनाडु में द्रमुक की मदद से जीत नहीं मिलती, तो उसकी सीटें 2014 से भी कम होतीं।

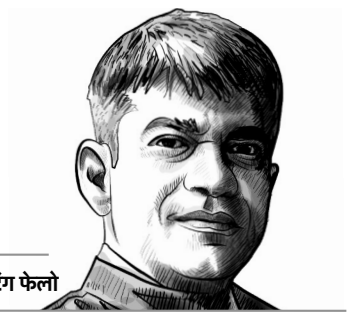

शंकर अय्यर, आईडीएफसी इंस्टी. के विजिटिंग फेलो

विपक्ष का थीम गीत आनंद बख्शी के ये अमर शब्द हो सकते हैं-*ये क्या हुआ, कैसे हुआ*। नरेंद्र मोदी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 'राष्ट्रीय' शब्द को खत्म कर दिया। देश की सबसे पुरानी पार्टी को नौ राज्यों में एक भी सीट नहीं मिली और नौ अन्य राज्यों में मात्र एक-एक सीट मिली। यानी 18 राज्यों में कांग्रेस एक छोटी खिलाड़ी बनकर रह गई है। सपा-बसपा के अंकगणित को लेकर उत्तर प्रदेश को चुनाव में एक महत्वपूर्ण राज्य माना जा रहा था। लेकिन मतदाताओं ने अवसरवादी गठबंधन और कांग्रेस के खिलाफ वीटो कर दिया।

पूरे देश में कांग्रेस को जितनी सीटें मिलीं, वह अकेले उत्तर प्रदेश में भाजपा को मिली सीटों से कम हैं। पिछली सर्दियों में जिन तीन राज्यों में कांग्रेस ने जीत हासिल की थी, उनमें से छत्तीसगढ़ में उसे दो, मध्य प्रदेश में एक और राजस्थान में एक भी सीट नहीं मिली। शहरी भारत में वह दिल्ली की सात में से सातों, मुंबई की छह में छहों और बंगलूरू की चार में से तीन सीटों पर हार गई।

18 मई, 1936 को जवाहर लाल नेहरू ने कांग्रेस पार्टी को संबोधित करते हुए कहा था, 'हम बड़े पैमाने पर जनता के साथ संपर्क खो चुके हैं और जनता से जो जीवनदायी ऊर्जा मिलती है, उससे वंचित हो गए हैं, हम सूखकर कमजोर हो गए हैं और हमारा संगठन सिकुड़कर अपनी शक्ति खो चुका है।' 28 दिसंबर, 1985 को राजीव गांधी ने पूछा था, 'हमारा महान संगठन क्या बन गया है? ' सत्ता के दलालों और उनके असर का जिक्र करते हुए राजीव गांधी ने उन्हें कांग्रेस के लिए अभिशाप बताया था।

ये टिप्पणियां 23 मई, 2019 को पूरी तरह सच साबित हुईं, जब कांग्रेस के कद्दावर नौ पूर्व मुख्यमंत्री-शीला दीक्षित, भूपेंद्र सिंह हुड्डा, हरीश रावत, अशोक चव्हाण, सुशील कुमार शिंदे, एम वीरप्पा मोइली, नबान टुकी, मुकुल संगमा और दिग्विजय सिंह लोकसभा चुनाव हार गए। अगर तमिलनाडु में द्रमुक की सहायता से जीत नहीं मिलती, तो कांग्रेस की सीटें 2014 के आंकड़ों से भी कम होतीं।

कांग्रेस की हार की व्यापकता भाजपा की जीत के आकार में परिलक्षित होती है। चौदह राज्यों में भाजपा ने 50 फीसदी से अधिक वोट प्राप्त किया, जबकि उत्तर प्रदेश तथा त्रिपुरा में 49 फीसदी और पश्चिम बंगाल में 40 फीसदी वोट हासिल किया। कांग्रेस ने सामरिक और रणनीतिक गलतियां कीं। कांग्रेस के प्रचार अभियान की सबसे बड़ी गड़बड़ी विवादास्पद राफेल खरीद सौदे से उपजे नारे- 'चौकीदार चोर है' का इस्तेमाल थी। एक टीवी स्टुडियो के लाउंज में प्रतीक्षा कर रहे एक कांग्रेस समर्थक को एक सिख व्यवसायी ने फटकार लगाते हुए कहा कि मोदी ने अपने खिलाफ लगाए गए हर नारे को भुनाया और उसे वोट में बदला, क्योंकि कोई भी यह नहीं मानता था कि व्यक्तिगत रूप से मोदी भ्रष्ट हैं। कांग्रेस प्रवक्ताओं को छोड़कर कोई भी वरिष्ठ नेता या महागठबंधन के नेता उस नारे का समर्थन करना नहीं चाहते थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कभी मौका नहीं खोया और इसका फायदा उठाते हुए अपने अनुयायियों के लिए एक साझा पहचान बनाई-मैं भी चौकीदार। चार शब्दों के इस नारे ने उनके लिए जनता की सार्वजनिक संबद्धता को विस्तार दिया। इस संबद्धता ने राजनीतिक परिदृश्य को परिभाषित करने वाले हर तरह के आक्रोश एवं संकट को दबा दिया। कांग्रेस के बड़े नेताओं को यह बेहतर पता होना चाहिए था। कैश फॉर वोट घोटाले के बाद वर्ष 2008 में मनमोहन सिंह को भ्रष्ट बताने के विपक्ष के प्रयास भी विफल हो गए थे। पर चौकीदार चोर है का नारा पिटने के बाद भी राहुल गांधी इसके साथ बने रहे।

युद्ध में जीत के लिए चपलता जरूरी है। भाजपा द्वारा राष्ट्रवाद को मुद्दा बनाने के बाद कांग्रेस राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर जूझ रही थी। कांग्रेस ने सर्जिकल स्ट्राइक के लिए वायुसेना की प्रशंसा की, पर उसके नेता साजिश की बात कहने से खुद को नहीं रोक सके। अपने कार्यकाल के दौरान किए गए सर्जिकल स्ट्राइक पर पांच साल तक चुप रहने के बाद अचानक कांग्रेस सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में कहने लगी।

कांग्रेस ने चाहे-अनचाहे बेरोजगारी और कृषि संकट के मुद्दे उठाए। इसका फायदा उसे राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों में मिला। पर मोदी को भ्रष्ट बताने की सनक ने कांग्रेस के प्रचार अभियान को पटरी से उतार दिया। पार्टी का सबसे भव्य आइडिया आय सहायता योजना था, जिसे न्याय कहा गया। कांग्रेस के घोषणापत्र में कुछ शानदार विचार थे-महिलाओं को केंद्र में रोजगार के लिए 33 फीसदी आरक्षण, सीएसआर फंड द्वारा वित्त पोषित कौशल प्रशिक्षण योजना का विचार, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए उच्च आवंटन और बेहतर जीएसटी। पर चौकीदार चोर है के शोर में ये गुम हो गए। चुनावी सफलता अंतिम व्यक्ति तक पहुंच की मांग करती है। कांग्रेस तमिलनाडु में 1967 से, पश्चिम बंगाल में 1977 से, उत्तर प्रदेश और गुजरात में 1989 से, बिहार में 1990 से, त्रिपुरा में 1992 से और ओडिशा में 2000 से सत्ता में नहीं है और 1999 से महाराष्ट्र में राकांपा पर निर्भर है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी वह पंद्रह वर्षों से सत्ता से बाहर थी।

इन राज्यों में लोकसभा की 325 सीटें आती हैं। फिर पार्टी ने संगठन के पुनर्निर्माण पर भी बहुत कम ध्यान दिया है। अपनी मार्केटिंग और लॉजिस्टिक के प्रबंधन के लिहाज से मोदी का अभियान गर्व करने लायक है। विकास के गोंद से राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के कट्टरपंथियों की आकांक्षाओं को जोड़कर मोदी ने राजनीतिक परिदृश्य को फिर से परिभाषित किया है।

भारत साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद और समाजवाद को पहले से जानता था, मोदी ने उसमें एक और वाद जोड़ दिया-मोदीवाद। 2014 में कांग्रेस नेता संजय निरुपम ने पार्टी की स्थिति बयान करते हुए कहा था कि अगर नरेंद्र मोदी कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ते, तो हार जाते। वर्ष 2019 में मुंबई में एक वाट्सऐप संदेश घूम रहा है कि अगर राहुल भाजपा से चुनाव लड़ते, तो जीत जाते। यह कांग्रेस के पतन को दर्शाता है। सवाल यह है कि क्या राहुल गांधी 1936 और 1985 की अस्तित्वगत दुविधाओं का जवाब पा सकते हैं, जो कांग्रेस को नई सहस्राब्दी में बनाए रखे?

अंतर्ध्वनि

>> कोलेट

खुश रहना बुद्धिमान होने की एक तरकीब है

मुझे अपने अतीत से प्यार है। मुझे अपने वर्तमान से प्यार है। जो मेरे पास था, उसमें मुझे शर्म नहीं थी, और मैं इस बात से दुखी नहीं हूं कि अब वह मेरे पास नहीं है। मेरा मानना है कि जो भी काम करें, उसे उत्साह के साथ करें। लेखक बनने के लिए जरूरी है कि वह सब कुछ लिखें, जो आपके मन में आता है। लेकिन अच्छा लेखक वह होता है, जो अपने लिखे हुए का सही आकलन कर सकता है, और बिना किसी अफसोस के उसके अधिकांश हिस्से को नष्ट कर सकता है। लेखन से ही और अधिक लेखन होता है। हम अपने बारे में जितनी बार बेहतर महसूस करेंगे, उतनी ही कम बार हमें खुद को बड़ा मानने के लिए किसी और को गिराने के लिए धक्का नहीं मारना पड़ेगा। ऐसा नहीं है कि मैंने बहुत अधिक पढ़ा है। मैं उन्हीं किताबों को बार-बार पढ़ती जाती हूं। लेकिन ये सभी मेरे लिए जरूरी थीं। उनकी उपस्थिति, उनकी गंध, उनके शीर्षकों के अक्षर और उनके चमड़े की जिल्द की बनावट। कवि के लिए, मौन स्वीकार्य ही नहीं, बल्कि खुश करने वाली प्रतिक्रिया है। संगीत प्यार है, जिसे एक शब्द की तलाश है। हंसी-मजाक एकदम खत्म हो जाने से जीना दूभर हो जाता है। लोगों को उम्मीद कायम रखनी चाहिए, क्योंकि उम्मीद करने में कुछ भी खर्च नहीं होता है। खुश रहना बुद्धिमान होने की एक तरकीब है। जब भी मुझे निराशा होती है, मैं अपने अंत की नहीं, बल्कि सौभाग्य की और कुछ छोटे-मोटे चमत्कारों की उम्मीद करती हूं, जो चमकदार कड़ी की तरह, मेरे दिनों की हार की फिर से मरम्मत कर देंगे। एकमात्र गुण जिस पर मुझे गर्व है, वह मेरा स्वयं पर संदेह करना है; जब कोई लेखक इसे खो देता है, तब उसके द्वारा लिखना बंद कर देने का समय आ जाता है।

-सुप्रसिद्ध फ्रेंच लेखिका

मुश्किल में इमरान सरकार

पाकिस्तान की आर्थिक हालत पहले ही खराब थी। तिस पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा मंजूर की गई आर्थिक मदद की कड़ी शर्तों के कारण महंगाई बेतहाशा बढ़ गई है। सरकारी कामकाज न सुधरने से भी इमरान खान की सरकार से लोग नाराज हैं।

कुलदीप तलवार

पाकिस्तान में इमरान खान की सरकार को कायम हुए नौ महीने हो गए हैं, पर अभी तक उन्हें बहुत से बुनियादी मामले समझ में नहीं आ सके। सत्ता संभालते ही उन्होंने वादा किया था कि वह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास मदद मांगने किसी भी सूरत में नहीं जाएंगे। पर पाकिस्तान के आर्थिक हालात इतने बदतर हो गए कि उन्हें आईएमएफ की शरण में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। आर्थिक तंगी से जूझ रहे पाकिस्तान को कड़े मापदंडों के साथ छह अरब डॉलर का बेलआउट पैकेज तो मिल गया है, पर इसके बाद भी उसकी आर्थिक हालत बदलने की उम्मीद नजर नहीं आ रही। आशंका जताई जा रही है कि पाकिस्तान इस मदद से चीन व अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का भारी कर्ज उतारेगा।

सरकार को अपने पहले साल में 19 अरब का कर्ज चुकाना है। पर ऐसा नहीं हो सकेगा। उसके विदेशी मुद्रा कोष का भंडार सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। दरअसल आईएमएफ और पाकिस्तान के बीच पैकेज के मसौदे पर दस्तखत करने से पहले ही टैक्स छूट के खात्मे और गैस व बिजली की कीमतों में बढ़ोतरी पर सहमति बन गई थी, जिससे लोगों पर 340 अरब रुपये का बोझ पड़ेगा।

परिसंपत्तियों का निजीकरण होगा और पिछले दरवाजे से अवमूल्यन करना पड़ेगा, जिससे और भी सख्त कदम उठाने होंगे। इससे आम पाकिस्तानी का जीना मुश्किल हो जाएगा। पैकेज के तहत पाकिस्तान को कर्ज तीन साल के दौरान मिलेगा। इससे आर्थिक संकट से जूझ रहे पाक के आधारभूत ढांचे और कर्ज की देनदारी में सुधार की उम्मीदों को लेकर चिंताएं और बढ़ेंगी। पाक मीडिया में इसकी आलोचना शुरू हो गई है। अखबार लिख रहे हैं कि आईएमएफ के पैकेज ने लाखों लोगों पर जो आर्थिक बोझ डाला है, उसके नतीजे जल्दी सामने आएंगे। आईएमएफ डील होने के कारण ही अर्थव्यवस्था डगमगाती दिख रही है। रुपया डॉलर के मुकाबले 148-150 रुपये तक पहुंच गया है। महंगाई आसमान छू रही है। इमरान खान ने लोगों को सब्र से काम लेने के लिए कहा है।

आगामी 18 जून को वहां बजट पेश होना है। चूंकि आईएमएफ ने पाकिस्तान के सामने बेहद मुश्किल शर्त रखी है, इसलिए यह बजट पाक अधिकारियों की वित्तीय रणनीति की पहली अग्निपरीक्षा होगा। इस बजट में राजस्व में बढ़ोतरी, टैक्स में दी जा रही छूट में कटौती जैसे कदमों से प्राथमिक घाटा जीडीपी का 0.6 प्रतिशत करने का लक्ष्य पूरा करना होगा। इसके साथ ही पाकिस्तान को अपने खर्च पर भी लगाम लगानी होगी। आम ख्याल यह है कि इमरान खान की सरकार अगर इन शर्तों पर अमल करेगी, तो उसे जनता के भारी रोष का सामना करना पड़ेगा।

बड़े पैमाने पर उखाड़-पछाड़ के मामलों ने और उलझा दिया है। वित्त मंत्री, स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान के गवर्नर और संघीय राजस्व बोर्ड के अध्यक्ष को हटा दिए जाने से इन संस्थाओं के प्रति भरोसा कमजोर हुआ है। उससे पहले इमरान खान ने अपने मंत्रिमंडल में रद्दोबदल की थी। किसी से एक विभाग नहीं चल सका, तो उसे दूसरा विभाग दे दिया गया। इससे भी कामकाज में कोई सुधार नहीं आया है। इससे जनता का इमरान खान से मोहभंग होता जा रहा है।

पाकिस्तान में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जिनका मानना है कि मुल्क परोक्ष रूप से राष्ट्रपति शासन की ओर बढ़ रहा है। वहां मध्यावधि चुनाव की भी चर्चा जारी है। इमरान खान को अगर अपनी सरकार को नाकामी से बचाना है, तो जरूरी है कि वह तुरंत जनता को आर्थिक राहत देने का बंदोबस्त करें। इसके बगैर वह मुल्क की डूबती नैया को नहीं बचा पाएंगे।

मंजिलें और भी हैं

>> गरिमा पूनिया

अंडमान के द्वीपों को कचरामुक्त करने का संकल्प

समुद्री किनारों पर सुकून के पल बिताना हर किसी को अच्छा लगता है। सूर्योदय हो या सूर्यास्त, दोनों नजारे यहां शानदार होते हैं। यहां बैठकर ठंडी हवा का आनंद सबको तरोताजा कर देता है। लेकिन सुकून का मजा तब किरकिरा हो जाता है जब आप किनारों पर पड़े कचरे की दुर्गंध से परेशान हो जाएं या प्लास्टिक की कोई वस्तु आपके पैरों से लिपट जाए। मैं अंडमान में एक पत्रिका में बतौर संपादक कार्यरत हूं। 2017 में मैं अंडमान के नील द्वीप पर छुट्टियां मनाने गई थी। तब मैं पढ़ाई कर रही थी। नील द्वीप के किनारों पर फैले कचरे ने मुझे परेशान कर दिया। मैंने समुद्र तटों पर बोतलों, मछली पकड़ने के जाल और टूटी हुई प्लास्टिक की वस्तुओं की तरह बहुत सारे कूड़ेदान देखे। मैं अपने स्कूबा कोर्स (समुद्र में पानी के अंदर जाने) के दौरान देखे गए खूबसूरत समुद्री जीवन के बारे में सोचती रही कि, भीतरी के मुकाबले कैसे ऊपरी सतह पर पर्यावरण प्रभावित होता है। मैंने तभी इस द्वीप को साफ करने के बारे में सोचा, पर मुझे नहीं पता था कि यह लंबे समय तक चलेगा क्योंकि अगले वर्ष मुझे ब्रिटेन के ससेक्स विश्वविद्यालय में डेवलपमेंट स्टडीज में डिग्री लेने के लिए जाना था।

अंडमान में 1,000 से अधिक लुप्तप्राय प्रजातियां हैं, जिन्हें संरक्षित करना काफी महत्वपूर्ण हैं।

पर पर्यावरण से प्रेम के चलते मैंने इस द्वीप की सफाई करने की ठान ली। 2018 में वापस मैं नील द्वीप पर गई और *कचरे वाला प्रोजेक्ट* के जरिये द्वीप को कचरामुक्त बनाने में लग गई। नील द्वीप काफी छोटा और करीब सात किलोमीटर में फैला है। लेकिन पिछले कुछ सालों में यहां पर्यटकों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। यहां सफाई अभियान को सफल बनाने और लोगों का सहयोग पाने के लिए जागरूकता लाना बहुत जरूरी था। मैं जानना चाहती थी कि घरों से कचरा कैसे निकलता है और इसे कैसे फेंका जाता है। बतीचीत करने पर मुझे मालूम चला कि कचरे को इकट्ठा कर रिसाइकल करने का कोई प्रबंध नहीं था। मैंने देखा कि प्रबंधन के अभाव में द्वीप के अधिकांश रिसॉर्ट्स और घर खुले में कचरा जला रहे थे, जिससे वायु प्रदूषण भी हो रहा था। मैंने अपने स्वच्छता अभियान में स्कूली बच्चों को भी शामिल किया। हर स्कूल से तीन बच्चे लिए और इनको पर्यावरण प्रदूषण के बारे भी जानकारी दी और जागरूकता फैलाने के बारे में बताया। मुझे वहां के स्थानीय लोगों का पूरा समर्थन मिला। द्वीप के तट जंगल से घिरे हुए हैं। जहां समुद्र में प्रवाल भित्ति के कारण नाव से भी नहीं पहुंचा जा सकता था, वहां हम तैरकर गए और कचरा इकट्ठा कर बाहर लाए। इस अभियान के तहत नील द्वीप के पांच तटों से लगभग 250 किलोग्राम कचरा इकट्ठा किया गया। स्थानीय लोगों की मदद से उस कचरे को अलग किया गया। उसके बाद पोर्ट ब्लेयर नगर निगम के सहयोग से इकट्ठा किए हुए कचरे को चेन्नई पहुंचाया गया। मेरी पहल का नतीजा है कि,अब द्वीप के रिसाइकल होने वाले कचरे को चेन्नई भेजा जाने लगा है। इस अभियान में लोकल अथॉरिटी से लेकर होटल मालिक तक सबने सहयोग किया। मेरा अनुभव है कि लोग बदलाव चाहते हैं। यहां के लोग चाहते हैं कि कचरा ले जाने की सेवा शुरू हो जाए, ताकि कचरे को इधर-उधर नहीं फेंका जा सके। समुद्री तट इंसानों को मिला कुदरत का अनमोल तोहफा हैं, जिन्हें साफ-सुथरा और सुंदर बनाए रखने की पहल हमें ही करनी होगी। अंडमान में करीब 1,000 से अधिक लुप्तप्राय प्रजातियां पाई जाती हैं, जिन्हें संरक्षित करना काफी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे अपने पारिस्थितिकी संदर्भ में अद्वितीय हैं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

खुली खिड़की

देशों में द्वीपों की संख्या

दुनिया के विभिन्न देशों में निर्जन और आबादी वाले द्वीप मौजूद हैं। इनकी सबसे ज्यादा संख्या स्वीडन में है।

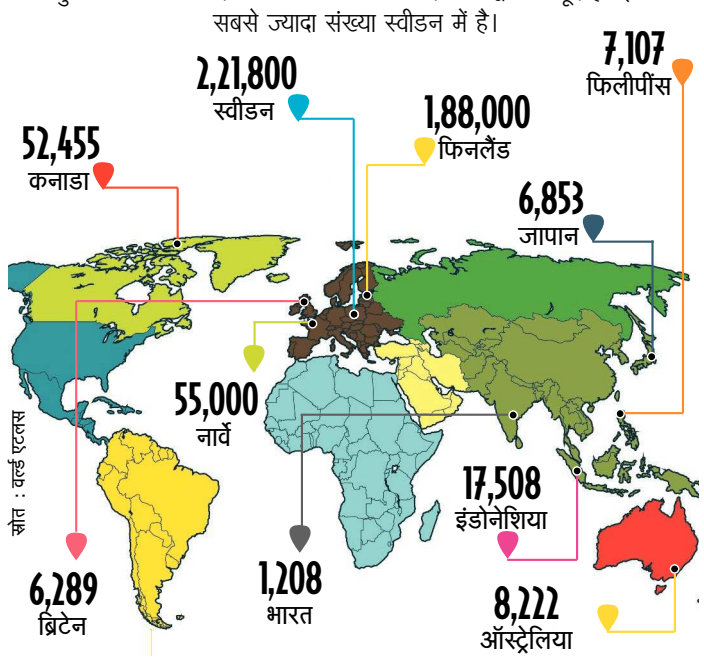

विश्वास की शक्ति

भयंकर तूफान से गेलीलो झील का पानी बांसों उछलने लगा। जो नावें चल रही थीं, वे बुरी तरह डगमगाने लगीं। लहरों का पानी भीतर पहुंचने लगा तो यात्रियों के भय का ठिकाना न रहा। एक नाव में एक कोने में कोई व्यक्ति सोया हुआ था। साथियों ने उसे जगाया। जगकर उसने तूफान को ध्यानपूर्वक देखा और फिर साथियों से कहा, 'आखिर इसमें डरने की क्या बात है? तूफान भी आते हैं, नावें भी डूबती हैं और मनुष्य भी मरते ही हैं। इसमें क्या ऐसी अनहोनी बात हो गई, जो आप लोग इतनी बुरी तरह हड़बड़ा रहे हैं?' सभी यात्री उसका उत्तर सुनकर अवाक् रह गए। उस व्यक्ति ने कहा, 'विश्वास की शक्ति तूफान से भी बड़ी है। तुम विश्वास क्यों नहीं करते कि यह तूफान क्षण भर बाद बंद हो जाएगा।' भयभीत यात्रियों के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना उसने फिर से आंखें बंद कीं और अपने अंतर की झील में उतरकर पूरी शक्ति के साथ कहा, 'शांत हो जा, मूर्ख!' और तूफान तुरंत शांत हो गया- सहमे हुए नटखट बच्चे की तरह नाव का हिलना भी बंद हो गया। इसके बाद यात्रियों ने चैन की सांस ली। अब उस अलमस्त यात्री- जीसस क्राइस्ट ने यात्रियों से पूछा, 'दोस्तो, जब विश्वास बड़ा है, तो तुमने तूफान को उससे भी बड़ा क्यों मान लिया था?' फिर बोले, दिल से डर निकालकर हिम्मत को स्थान देना चाहिए, तभी हर कार्य में सफलता प्राप्त हो सकेगी।

सत्संग

-संकलित

हरियाली और रास्ता

महिला, बूढ़ा और हीरा

एक महिला की कहानी, जिसने एक बूढ़े व्यक्ति को हीरा दे दिया।

एक महिला समुद्र के किनारे टहल रही थी। थोड़ी दूर बैठा एक बूढ़ा व्यक्ति उसे देख रहा था। बूढ़े ने देखा कि समुद्र की लहरों के साथ एक बहुत चमकदार पत्थर छोर पर आ गया। महिला ने नायाब-सा दिखने वाला वह पत्थर उठा लिया। वह हीरा था। महिला ने चुपचाप उसे अपने पर्स में रख लिया और पहले की तरह टहलने लगी। बूढ़ा व्यक्ति यह देखकर बेचैन हो गया। अचानक वह अपनी जगह से उठा और उस महिला के सामने जाकर कहने लगा, 'मैंने पिछले चार दिन से कुछ नहीं खाया है। क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो?' महिला ने तुरंत अपना पर्स खोला और कुछ खाने की चीज ढूंढने लगी। उसने देखा कि बूढ़े की नजर उस पत्थर पर है, जिसे कुछ समय पहले उसने समुद्र तट पर रेत में पड़ा पाया था। उसने झट से वह पत्थर निकाला और उस बूढ़े को दे दिया। बूढ़ा हैरान हो गया। वह सोचने लगा कि ऐसी कीमती चीज भला कोई इतनी आसानी से कैसे दे सकता है! उसने गौर से उस पत्थर को देखा, वह हीरा ही था। वह औरत वापस अपने रास्ते पर आगे बढ़ चुकी थी। हीरा देने के बावजूद उसके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। अब भी उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान थी। बूढ़े ने फिर उस औरत को रोका और पूछा, 'क्या तुम जानती हो कि जो चीज तुमने इतनी आसानी से मुझे दे दी, वह एक बेशकीमती हीरा है?' महिला ने कहा- 'जी हां, मुझे यकीन है कि यह हीरा ही है। लेकिन मेरी खुशी इस हीरे में नहीं, मेरे भीतर है। समुद्र की लहरों की तरह ही दौलत और शोहरत आती-जाती रहती है। अगर अपनी खुशी इनसे जोड़ेंगे, तो कभी खुश नहीं रह सकते।' बूढ़े ने हीरा उस महिला को वापस कर दिया और कहा-'यह हीरा तुम रखो और मुझे इससे कई गुना ज्यादा कीमती वह भाव दे दो, जिसकी वजह से तुमने इतनी आसानी से यह हीरा मुझे दे दिया।'

धन-दौलत और शोहरत में खुशियां ढूंढना बेकार है।